जून २०१२

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सुख की दुकान

सुख की दुकान

संपादकीय

बालमित्रों,

तुम खरीदारी करने तो जाते ही होंगे। खरीदारी करने में कितना मज़ा आता है! सब नई-नई चीज़ें खरीदने को मिलती हैं। तब हमें ऐसा विचार भी आ जाता है कि, दुकानदार को कितना अच्छा है! उसे जब चाहिए तब, सभी चीज़ें घर बैठे ही मिल जाती हैं।! ठीक है न?

परम पूज्य दादाश्री हमेशा कहते थे, अपनी जिस चीज़ की दुकान हो, वह चीज़ हमें बाहर से खरीदकर नहीं लानी पड़ती। उसी तरह, जब हम सुख की दुकान खोल दें तो हमें सुख की कभी कमी नहीं पड़ती।

सुख की दुकान का मतलब क्या है? वह किस तरह खोलें? उसके क्या फायदें हैं? इसकी सुंदर समझ इस अंक में दी है।

तो चलो, इसे पढ़कर हम भी सुख की दुकान खोलते हैं और घर बैठे सुख पाएँ।

डिम्पल मेहता

दादाजी कहते हैं....

सुख की दुकान

सुख की दुकान का क्या मतलब है? सभी को सुख का सामान देना। यह व्यापार अच्छा है। जब दुकान शुरू करें तब सुख का सामान रखना चाहिए या दुःख का?

प्रश्नकर्ता : सुख का ही, दादा।

दादाश्री : हाँ, सबको सुख का सामान देना है। उस समय दुःख आ जाए तो भी तुम तो उसे सुख का ही सामान देना, दूसरा व्यापार मत करना। सुबह उठने के बाद सभी को सुख ही देना, दुःख देना ही नहीं। हररोज़ सुबह तय करना कि जो भी मुझे मिले उसे कुछ न कुछ सुख देना है।

अब कोई कहे, कि लोगों को हम सुख किस तरह दें, हमारे पास पैसा नहीं है। तो

अनुक्रमणिका

१ दादाजी कहते हैं
२ दो प्रश्न
६ यह तो नई ही बात है!
८ सुख की दुकान
१२ अपने आपको परखकर देखो!
१४ ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ
१६ मीठी यादें
१७ पूज्यश्री के साथ बच्चें

सुख सिर्फ पैसों से ही दिया जा सके, ऐसा नहीं है। कोई मनुष्य भूखा हो तो उसे कुछ खाने-पीने की चीज़ दे दो। उसके पास कपड़े न हों तो अपने पुराने कपड़े दे दो। आपके अंदर जो-जो शक्ति हो उससे सुख दे सकते हो, अक्ल से थोड़ी समझ देकर उसका दुःख कम किया जा सकता है। अंत में ओब्लाइजिंग नेचर तो रखना ही चाहिए। सुख की दुकान ऐसी खोलो कि, सबको सुख ही देना है; "मैं सुख देने के लिए ही आया हूँ" ,ऐसा मन में रहना चाहिए।

सुख की दुकान खोलोगे तो तुम्हारे हिस्से में भी सुख ही आएगा और लोगों के हिस्से में भी सुख ही जाएगा। अपने यहाँ मिठाई की दुकान हो तो कहीं और से जलेबी खरीदने जाना पड़ेगा? जब खानी हो, तब खा सकते हैं। दुकान ही मिठाई की हो, वहाँ फिर क्या? अतः तुम सुख की दुकान ही खोलो। फिर कोई झंझट ही नहीं। यानी किसीको सुख दिया हो तो हमें भी सुख मिलेगा ही। किसीको दुःख देकर हम सुखी हो जाएँ, ऐसा कभी होगा ही नहीं। इस संसार का कुदरती नियम क्या है कि, यदि तुम अपने फल औरों को दोगे तो कुदरत तुम्हारा चला लेगी। सबको सुख दिया तो तुरंत ही उसका परिणाम, घर बैठे हमें सुख मिल जाएगा। इसलिए सुख ही देते रहना।

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : २
अखंड क्रमांक : २
जून २०१२

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९
राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by :
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डोलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजो।

दो प्रश्न

त्रिलोकचंद्र अनाज के व्यापारी थे। कभी-कभी व्यापार में उन्हें थोड़ी बहुत परेशानियाँ आती थीं, लेकिन वैसे तो उनका व्यापार अच्छा चलता था। फिर भी वे बिल्कुल संतुष्ट नहीं थे। उनके जीवन में उन्हें सुख-शांति नहीं थी।

बहुत समय से दो प्रश्न उन्हें खूब परेशान कर रहे थे कि "सबसे ज्यादा, महत्व का काम कौन-सा है?" और "सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति किसे कहेंगे?"

"यदि मुझे इन दो प्रश्नों के उत्तर मिल जाएँ, तो मैं खूब सुखी हो जाऊँगा।" त्रिलोकचंद्र के मन में यह मान्यता दृढ़ हो गई थी। उन्होंने सोचा, "जो सबसे ज्यादा महत्व का काम होगा, मैं यदि वह करूँगा, तो मुझे कभी असफलता नहीं मिलेगी। फिर मेरा व्यापार खूब तेज़ी से चलेगा और जो व्यक्ति सबसे महत्वपूर्ण होगा उसके साथ व्यापार करूँगा, तो मुझे कभी भी घाटा नहीं होगा।

"इन प्रश्नों के हल के लिए वे बहुत जगह गए। मित्रों से पूछा, बड़े-बुजुर्गों से पूछा, ज्योतिषियों से भी पूछ लिया। लेकिन कहीं से उन्हें संतोषपूर्ण जवाब नहीं मिला। अंत में उनके एक मित्र ने उन्हें एक विद्वान पंडित के बारे में बताया, "गाँव की सीमा पर, एक आश्रम में वे रहते हैं। उनसे तेरे प्रश्नों का जवाब ज़रूर मिल जाएगा।"

जब त्रिलोकचंद्र उन पंडित के पास गए, तब वे अपनी कुटिया के पास की जमीन खोद रहे थे। त्रिलोकचंद्र को देखकर पंडित ने उनका स्वागत किया और फिर अपने काम में लग गए, पंडित वृद्ध और कमज़ोर लग रहे थे। जमीन खोदते-खोदते वे हाँफ रहे थे।

त्रिलोकचंद्र ने उनके पास जाकर अपनी उलझन बताई,
"हे विद्वान पंडित! मैं आपके पास दो प्रश्न लेकर आया हूँ।
सबसे महत्वपूर्ण काम किसे कहेंगे? और सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति

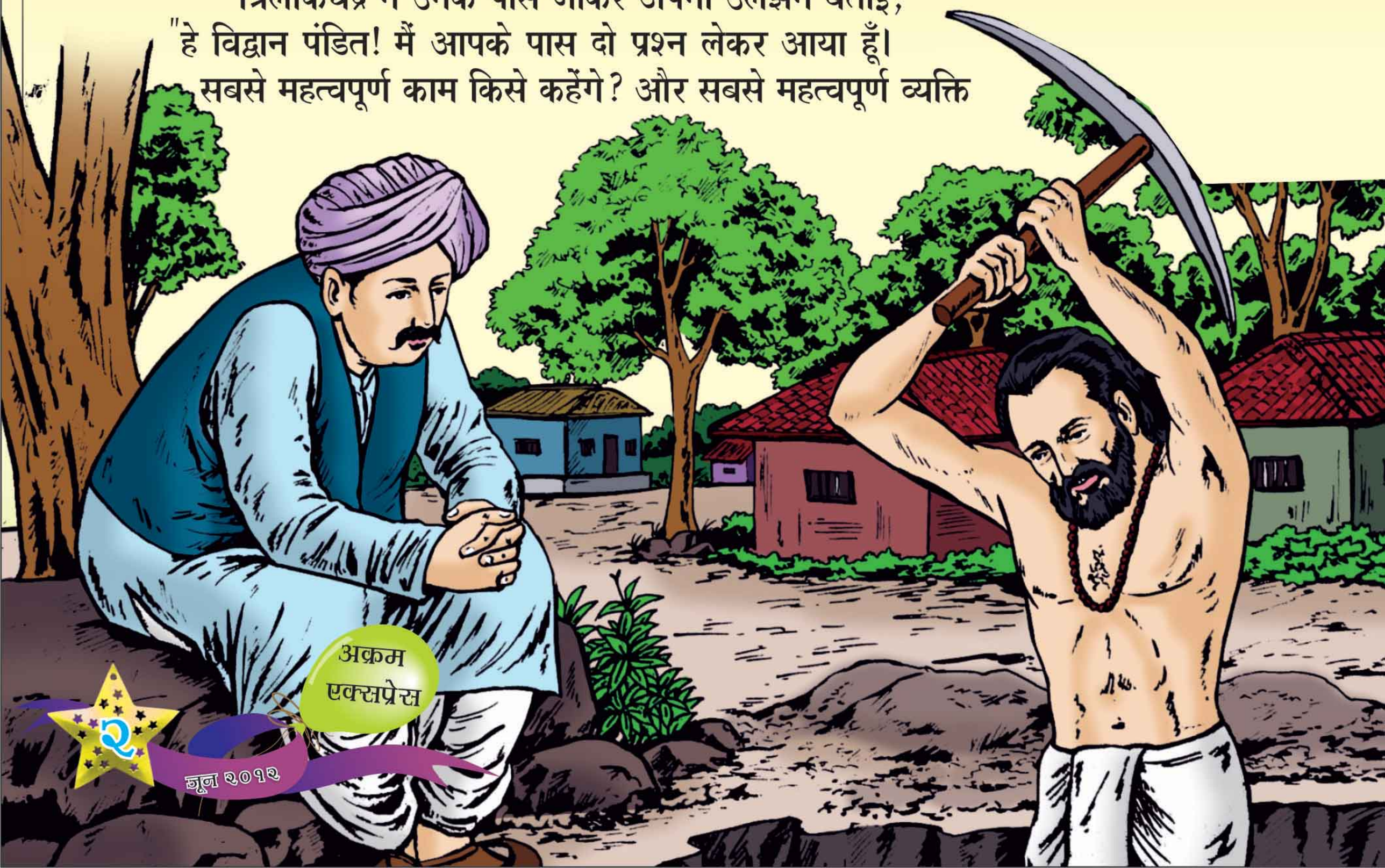

किसे कहेंगे?"

पंडित ने त्रिलोकचंद्र के प्रश्न सुने, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया और फिर काम में लग गए।

"आप बहुत थके हुए लग रहे हो, लाइए मैं आपकी मदद करूँ।" ऐसा कहकर त्रिलोकचंद्र ने पंडित के हाथ से कुदाली ले ली।" धन्यवाद " कहकर पंडित नीचे बैठ गए।

थोड़ी देर के बाद त्रिलोकचंद्र ने फिर अपने प्रश्न दोहराए। फिर भी पंडित ने कोई जवाब नहीं दिया।

"लाओ भाई, अब मैं खोदूँ " ऐसा कहकर थोड़ी देर बाद पंडित ने त्रिलोकचंद से कुदाली माँगी। लेकिन पंडित की कमज़ोरी देखकर, त्रिलोकचंद्र को यह ठीक नहीं लगा, और वे काम करते रहे। ऐसा करते-करते एक घंटा बीत गया। अंत में थक कर त्रिलोकचंद्र ने पंडित जी से कहा "पंडित जी, मैं तो अपने प्रश्नों का जवाब लेने के लिए आया था। यदि आपके पास जवाब नहीं हैं, तो मैं घर जाता हूँ।"

इतने में पंडित जी की नज़र किसी व्यक्ति पर गई, "इस तरफ कोई आ रहा है। चलो जाकर देखते हैं, कौन है।"

त्रिलोकचंद्र ने देखा, अरे वह तो उनके पुराने साझीदार का बेटा वीरू है। वह बुरी तरह घायल था। उसके सिर से खून की धारा बह रही थी। जैसे ही वह त्रिलोकचंद्र के पास पहुँचा वैसे ही वह ज़मीन पर गिर पड़ा। पंडित जी कुटिया में से एक कपड़ा ले आए। त्रिलोकचंद्र ने कपड़े से घाव पोंछा और घाव पर दबा कर रखा। लेकिन

खून बहना तो बंद ही नहीं हो रहा था। वह कपड़ा हटाकर त्रिलोकचंद्र ने धोया और फिर से घाव पर कसकर बाँधा। अंत में खून बहना बंद हुआ। त्रिलोकचंद्र कुटिया में जाकर, वीरू के लिए पानी ले आए।

सूरज डूब गया था और बाहर अब ठंडक हो गई थी। पंडित जी की मदद से त्रिलोकचंद्र वीरू को अंदर कुटिया में ले गए और पलंग पर सुलाया। त्रिलोकचंद्र भी लंबे सफर और काम की वजह से थक गए थे। जैसे ही पलंग पर लेटे, कि उन्हें नींद आ गई। जब उनकी आँख खुली, तब तक सुबह हो चुकी थी। वीरू भी जाग गया था। अचानक वीरू त्रिलोकचंद्र के पैरों में गिर गया, "मुझे माफ़ कर दो। मेरे पिताजी के साथ आपका जो झगड़ा हुआ था उसके लिए..."

"अरे भाई, वह तो पुरानी बात है।" "त्रिलोकचंद्र को वर्षों पहले का उनके साझीदार बचुलाल के साथ का झगड़ा याद आया, "थोड़ी गलतफ़हमी के कारण तुम्हारे पिताजी और मेरे बीच में वह अनबन हुई थी और हम साझीदारी से अलग हो गए। लेकिन तू अभी वह बात कहाँ ले बैठा?"

आँखों में आँसू भरकर वीरू ने कहा, "यह बात मैंने अपने अंदर दबाकर रखी थी, और आपके साथ बदला लेने का मौका देख रहा था। मुझे पता चला कि आप इन पंडित जी के पास आने वाले हैं। आप जब आश्रम से वापस लौटते, तब मैंने आपको मारने की योजना बनाई थी। मैं दूर से आपका इन्तज़ार कर रहा था। सारा दिन बीत जाने पर भी आप वापस नहीं लौटे, इसलिए मैं आश्रम की तरफ आने के लिए निकला। लेकिन वहीं मेरे साथ दुर्घटना घट गई। यदि आपने मेरा इलाज नहीं किया होता, तो मैं मर गया होता। मैं आपको मारने आया, और आपने ही मेरी जान बचाई। मैं आपका बहुत आभारी हूँ।"

उनकी पुरानी दुश्मनी इस तरह खत्म हुई, इस बात से त्रिलोकचंद्र को बहुत आनंद हुआ। वीरू के परिवार के लिए उन्होंने अपनी शुभकामनाएँ दीं, त्रिलोकचंद्र ने वीरू से विदा ली। बाहर पंडित जी से हाथ जोड़कर कहा, "मैं आपसे जाने की इजाज़त लेने आया हूँ, परंतु

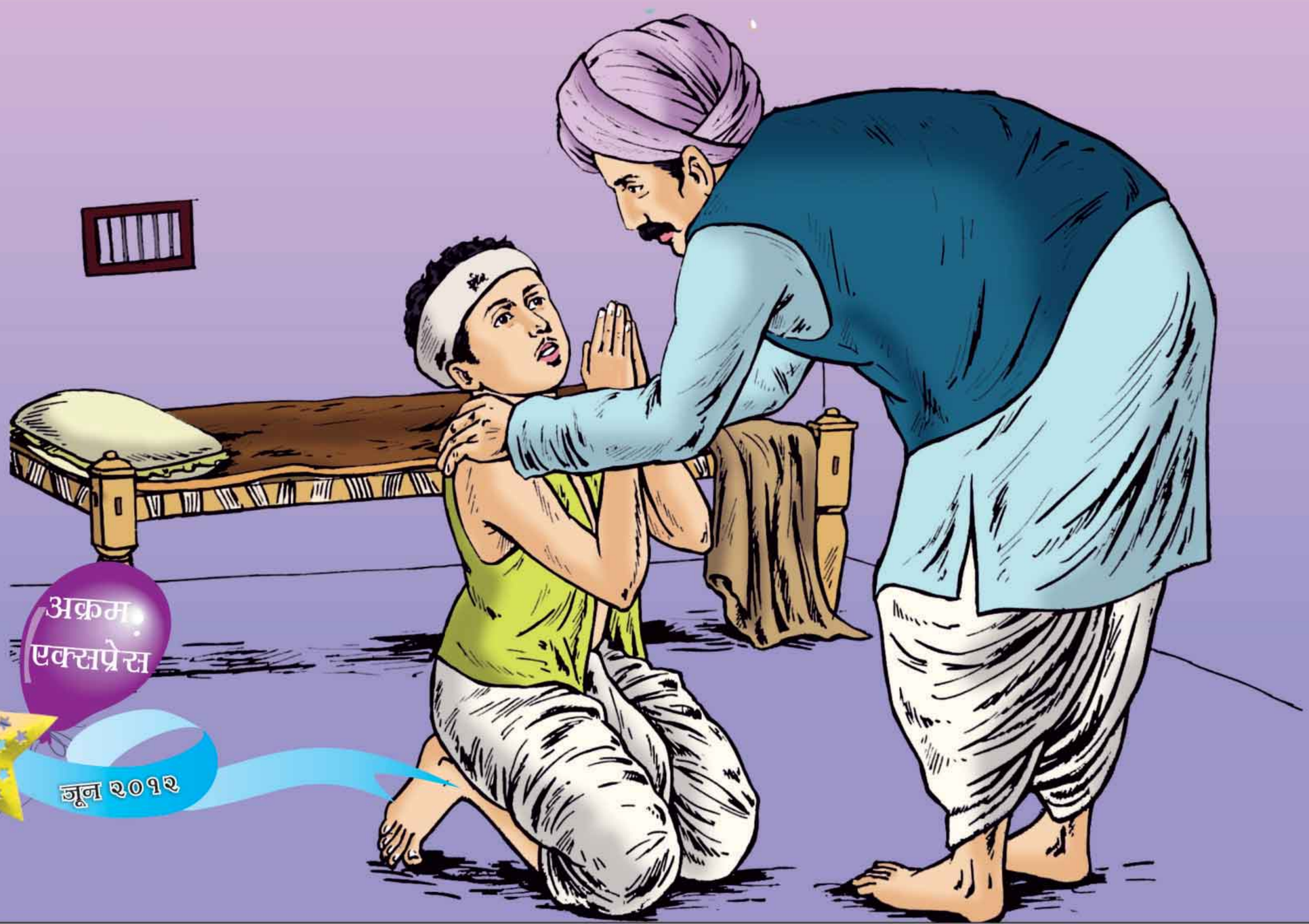

जाने से पहले फिर आपसे विनती करता हूँ, कि आप मुझे मेरे प्रश्नों का जवाब दीजिए।"

कल जिस जगह खुदाई का काम किया था, वहाँ पंडित जी बीज बो रहे थे। त्रिलोकचंद्र के सामने देखकर उन्होंने कहा, "लेकिन आपको तो आपके प्रश्नों के जवाब मिल गए हैं।"

"मतलब यह कि, कल यदि आपने मेरी कमज़ोरी का ध्यान न रखा होता, मेरे लिए यह खुदाई काम नहीं किया होता, और फिर घर जाने के लिए निकल गए होते तो, रास्ते में वीरू ने आप पर आक्रमण कर दिया होता और आपको मेरे पास नहीं रुकने का पछतावा होता", पंडित जी ने समझाते हुए कहा।

त्रिलोकचंद्र ध्यान से पंडित जी की बात सुन रहे थे।

पंडित जी ने आगे कहा, "अतः उस समय का सब से महत्वपूर्ण काम मेरी मदद करना, सुख पहुँचाना था और मैं उस समय आपके लिए खास व्यक्ति था। फिर जब वीरू अपने पास आया तब, उसके पिताजी ने आपको दुःख दिया है, ऐसा सोचकर आपने उसकी मदद न की होती तो वह आपके साथ की दुश्मनी खत्म किए बिना ही मर गया होता। अतः उस समय, सबसे महत्वपूर्ण काम था, वीरू की मदद करना, उसे दुःख और पीड़ा में से बाहर निकालना और उस समय वीरू आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था।

अतः याद रखना कि जो व्यक्ति आपके आसपास है, वह आपके लिए सब से खास व्यक्ति है और उसे सुख देना। उसे सुख देना वही सबसे महत्वपूर्ण काम है। शायद कभी दुःख आ पड़े, फिर भी हमें उसे सुख ही देना है। इसी लिए मनुष्य जीवन है। अतः आज से तुम तय करो कि जो कोई व्यक्ति आपसे मिले उसे सुख ही देना है, तो बदले में आपको भी सुख ही मिलेगा।"

पंडित जी की बात त्रिलोकचंद्र के मन को छू गई। नीचे झुककर उन्होंने पंडित जी से आर्शीवाद लिया। मुँह पर हल्की मुस्कुराहट के साथ पंडित जी बोले, "इस सुख के व्यापार में आपको कभी असफलता नही मिलेगी। और किसी भी व्यक्ति के साथ व्यापार करोगे, उसमें कभी भी घाटा नहीं होगा। कभी, दुःख आ जाए तो भी उसे सुख ही देना।

"अंत में, सुख की ही विजय होगी।"

सुख की दुकान यानी सभी को सुख देना। यदि बदले में दुःख आ जाए तब भी आप उसे सुख ही देना। जैसे कि कोई झगड़ा करने आए, तो हमें माफ़ी माँग लेनी चाहिए और उन्हें दुःख न हो इस तरह से झगड़ा बंद कर देना चाहिए।

यह तो न

जो अपना सुख दूसरे को भोगने के लिए दे दे, वह देवगति में जाता है, सुपरह्युमन। जैसे कि अपनी पसंद की चीज़ दूसरे की खुशी के लिए दे देना।

लोगों को सुख देने से चित्त की शुद्धि होती है। चित्त की शुद्धि अर्थात् क्या? उससे एकाग्रता बढ़ती है और दुःख देने से, शुद्ध चित्त भी अशुद्ध हो जाता है। जैसे कि पढ़ा हुआ याद नहीं रहता, दिया हुआ काम भूल जाते हैं।

एक ही बात है!

किसी भी जीव को दुःख अच्छा नहीं लगता। हर एक जीव सुख ही ढूँढ़ता है। इस पेड़ को अगर काटे तो उसे भी दुःख होता है। फिर वह मुरझा जाता है। अतः उसे भी दुःख अच्छा नहीं लगता। यानी प्रत्येक जीव को सुख ही अच्छा लगता है।

सुख की दुकान

शंभु काका, ५०० ग्राम पेड़े और एक कोल्डड्रिंक दो न।
प्लास्टिक बेग नहीं मिलेगी
क्या हुआ बेटा? आज फिर तेरा मुँह उतरा हुआ है। फिर बंटी के साथ ढिशुम-ढिशुम करके आई है क्या?

ना, बंटी के साथ नहीं, वो प्रीति के साथ झगड़ा हुआ है। वह तो बस ऐसे ही मेरी दोस्त होने का नाटक करती है।
ओह! तो आज प्रीति की बारी थी ऐसा न!

पिताजी, पेड़ा खाना है।
यह ले।

देखा श्रुति, मेरी मिठाई की दुकान है। इसलिए मुझे कभी भी बाहर से मिठाई खरीदने नहीं जाना पड़ता।
ऐसे तो हमारी भी कपड़े की दुकान है। तो हमारे घर बैठे ही कपड़े आ जाते हैं। इसमें क्या?

इसका मतलब यह हुआ कि हम जिसकी भी दुकान खोलते हैं, वह चीज़ हमें घर बैठे ही मिल जाती है।

वह तो ऐसा ही होता है न काका।

तो तू एक काम कर न! आज से सुख की दुकान खोल ले न! तो सुख भी तुझे घर बैठे ही मिल जाएगा। फिर किसी के साथ झगड़ा ही नहीं होगा।

सुख की दुकान? वह कैसे?

सुबह उठे तब से दूसरों को सुख ही देना, तू किसीको दुःख मत देना।

मैं कैसे दूसरों को सुख दे सकती हूँ? मैं तो बहुत छोटी हूँ।

तो क्या हुआ? तू बंटी को पढ़ा सकती है, उसे अपने खिलौने खेलने के लिए दे सकती है, मम्मी के घर के काम में मदद करवा सकती है, गरीबों को खाना-कपड़े आदि देना, यह सब दूसरों को सुख दिया ही कहलाता है।

ओह! यह तो बहुत आसान है।

तो कर दे शुरू। फिर देख तुझे कितना आनंद रहेगा।

इतने में तो पसीने से लथपथ एक मज़दूर वहाँ आ गया।
यह पता पढ़कर बता दो न बहन।
प्लास्टिक बेग नहीं मिलेगी
यह तो बिल्कुल मेरे घर के पास ही है। चलो मैं तुम्हें ले जाती हूँ।
पते पर पहुँचाकर,
काका, यह ठंडा पी लो। गर्मी में अच्छा लगेगा।
भगवान तुझे सुखी रखे बेटा।
घर आकर श्रुति अखबार लेकर बैठी।
श्रुति बहन, अखबार में क्या नई-पुरानी खबर है?
बस वही का वही। कुछ खास नहीं है।
मुझे पढ़ना-लिखना आता तो कितना अच्छा होता?
मैं तुम्हें पढ़ना-लिखना सिखाऊँगी।

श्रुति रोज मंगू बहन को एक घंटे दिन व दिन पढ़ाती। मंगू बहन का उत्साह देखकर उसे भी बहुत आनंद आता। दिनोंदिन श्रुति का आनंद बढ़ता गया।
एक शाम जब श्रुति शंभु काका की दुकान पर पेड़े लेने गई, तब मंगू बहन हाथ में एक काग़ज़ लेकर वहाँ आ गई।
श्रुति बहन गाँव से मेरे भाई की चिट्ठी आई है। मैं तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ?
हाँ हाँ।
चिट्ठी पढ़ने के बाद
बेटा तेरा जितना उपकार मानूँ उतना कम है। मेरी जिंदगी की सबसे बड़ी परवशता तुमने दूर कर दी।
श्रुति को संतोष हुआ। आज से पहले ऐसा संतोष उसे कभी नहीं हुआ था।
ले बेटा, आज ये पेड़े मेरी तरफ से ले जा। सुखी रहना और तेरी "सुख की दुकान" भी इसी तरह ज़ोर-शोर से चलाना।

अपने आपको परखकर देखो!

चलो, हम सुख की दुकान खोज़ें।

नीचे दिए हुए प्रश्नों के जवाब देकर। सुख की दुकान कहाँ पर है यह खोज़ निकालें। नक्शे में बताए अनुसार, ४ आड़े रास्ते हैं जिनके नाम हैं, आनंद रूट, प्रसन्न वे, सुख मार्ग और खुशी रोड। खड़े रास्तों को १,२,३,४ नंबर दिए गए हैं। सुख की दुकान किसी एक आड़े और खड़े रास्ते के जोड़ पर है।

सूचना : नक्शे में किन्हीं भी २ जोड़ों का अंतर १ कि.मी. है। आनंद रूट और रोड नं. १ के जंक्शन का नाम है उल्लास चौक, वहाँ से हम अपनी खोज शुरू करेंगे।

१ एक पार्टी में सब म्यूज़िकल चेयर खेल रहे हैं। एक दोस्त जिसके पैर में फ्रेक्चर है, वह एक कौने में उदास बैठकर सबको देख रहा है।

(अ) तुम उस दोस्त की तरफ़ ध्यान न देकर, म्यूज़िकल चेयर रेस में शामिल होकर खेल का मज़ा लोगे। (उल्लास चौक से २ कि.मी. पूर्व दिशा में जाओ)

(ब) तुम उस दोस्त के साथ बैठकर बात-चीत करोगे और उसका उत्साह बढ़ाने की कोशिश करोगे। (उल्लास चौक से १ कि.मी. पूर्व दिशा में जाओ)

(क) म्यूज़िकल चेयर रेस बंद करवा कर तुम खो-खो खेलना शुरू कराओगे। (उल्लास चौक से ३ कि.मी. पूर्व दिशा में जाओ)

२ टी.वी में तुम्हारा मन पसंद प्रोग्राम चालू होनेवाला है। उसी समय तुम्हारे पड़ोसी का बच्चा, तुम्हारे पास गणित का सवाल सीखने आता है।

(अ) तुम प्रेम से उसे गणित का सवाल सिखाते हो। (जहाँ हो, वहाँ से २ कि.मी. दक्षिण की तरफ़ जाओ)

(ब) मेरे पास अभी समय नहीं है ऐसा कहकर उसे वापस भेज देते हो। (जहाँ हो वहाँ से १ कि.मी. दक्षिण दिशा तरफ़ जाओ)

(क) तुम उसे भी अपने साथ टी.वी का प्रोग्राम देखने के लिए बिठा देते हो। (जहाँ हो वहाँ से ३ कि.मी. दक्षिण की तरफ़ जाओ)

३ बहुत ही ठंड है। तुमने एक वूलन शर्ट औऱ तुम्हारा मन पसंद जेकेट पहना है। तुमने देखा कि तुम्हारा कज़िन भाई (चचेरा भाई) सर्दी से ठिठुर रहा है।

(अ) तुम उसे कहोगे, स्वेटर क्यों नहीं पहना? जुकाम हो जाएगा तब फैशन का भूत सिर से उतर जाएगा।' (जहाँ हो वहाँ से १ कि.मी. उत्तर की तरफ़ जाओ)

(ब) तुम उसे अपना जैकेट पहनने के लिए दोगे। (जहाँ हो वहाँ से १ कि.मी. पश्चिम की तरफ़ जाओ)

(क) तुम ऐसा प्रयत्न करोगे कि तुम उसकी नज़र में ही न आओ। (जहाँ हो वहाँ से १ कि.मी दक्षिण की तरफ़ जाओ)

४ तुम्हारे दोस्त के घर पार्टी पूरी होने के बाद सब अपने-अपने घर जा रहे हैं। तुमने देखा कि तुम्हारे दोस्त की मम्मी बहुत थक गई हैं, औऱ उन्हें अभी बहुत सारा काम करना बाकी है।

(अ) तुम आंटी की मदद करने रुकोगे। (जहाँ हो वहाँ से १ कि.मी. दक्षिण की तरफ़ जाओ)

(ब) तुम भी तुम्हारे दोस्तों के साथ फटाफट घर जाने के लिए निकल जाओगे (जहाँ हो वहाँ से १ कि.मी. उत्तर की तरफ़ जाओ)

(क) तुम तुम्हारे दोस्त को मम्मी की मदद करने की सलाह देकर निकल जाओगे (जहाँ हो वहाँ से २ कि.मी उत्तर की तरफ़ जाओ)

किड्स केम्प की झलक

मुंबई

राजकोट

अपने आपको परखकर देखो का जवाब

जवाब : (नक्शे में लाइन करके बताना है) सुख की दुकान, खुशी रोड और रोड नं.१ के जोड़ पर है।)

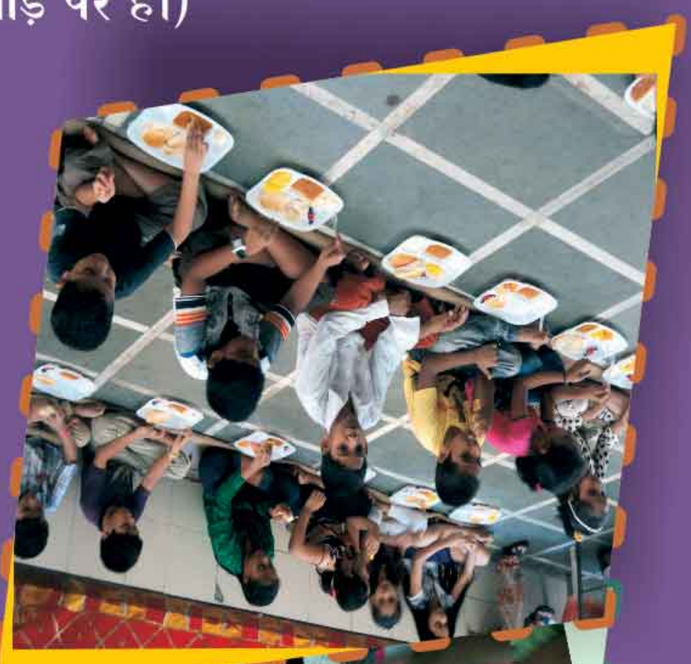

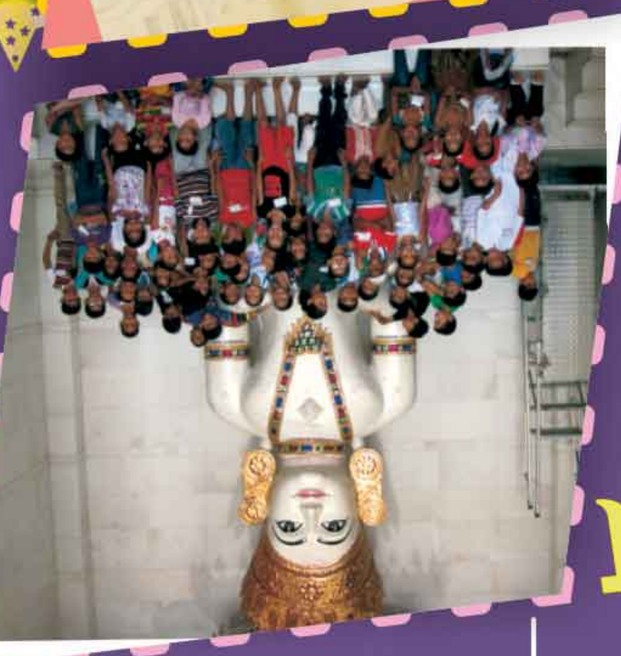

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

वसंतपुर नगर में जिनमति नाम के सेठ रहते थे। उनकी सुभद्रा नाम की एक पुत्री थी, सेठ को वह पुत्री बहुत प्रिय थी। सेठ की दृढ़ इच्छा थी कि अपनी पुत्री का विवाह ऐसे युवक के साथ करें जो पूरी तरह से जैन धर्म का पालन करता हो।

एक दिन चंपापुरी नगरी से व्यापार के लिए आए बुद्धदास ने सुभद्रा को देखा। वह उसके मन में बस गई। लेकिन जब उसे पता चला कि सुभद्रा के पिता का दृढ़ आग्रह है कि जैनधर्मी के साथ ही उसकी शादी करनी है। तब बुद्धदास सोच में पड़ गया। अब क्या करना चाहिए? वह तो जैन धर्मी नहीं था।

अंत में उसने किसी मुनि के साथ रहकर थोड़े ही समय में जैन धर्म में कुशलता प्राप्तकर ली। जिनमति सेठ ने जाँचकर के पक्का किया कि बुद्धदास पूरी तरह से जैनधर्मी है। संतुष्ट होकर सेठ ने सुभद्रा की शादी बुद्धदास के साथ करवाई।

सुभद्रा शादी के बाद ससुराल में आई, जब उसे पता चला कि ससुराल में सभी बौद्ध धर्म का पालन करते हैं, तब उसे बहुत दुःख हुआ, फिर भी सबके बीच रहते हुए, मन मजबूत करके जैन धर्म का पालन करने लगी।

सुभद्रा की सासु कदम-कदम पर बहू से उल्टा बोलती थी। जैन धर्म की निंदा करती रहती थी। सुभद्रा यह सब शांति से सह लेती।

एक दिन सुभद्रा ने एक मुनि महाराज को भिक्षा के लिए निकलते हुए देखा। उसने मुनि को अपने घर भोजन लेने के लिए आने की विनती की। मुनिराज पधारे। मुनि की आँख में कण गिर गया था। वह उन्हें बहुत चुभ रहा था। अगर तुरंत ही वह कण नहीं निकाला जाता तो आँख जाने का खतरा था। लेकिन स्त्री मुनि का स्पर्श कैसे कर सकती थी।

सुभद्रा ने जीभ से मुनि की आँख में से कण निकाला। मुनि की आँख ठीक हो गई। बहुत सावधानी रखने पर भी, कणकी निकालते समय सुभद्रा के माथे की बिंदी का सिंदूर का दाग़ मुनि के माथे पर चिपक गया।

मुनि मोदक लेकर बाहर निकले। बाहर बैठी हुई सास ने मुनि के माथे पर लगा हुआ सिंदूर का निशान देखा। उसे साधु और सुभद्रा के चरित्र पर शंका हुई। उसने शोर मचाकर सभी लोगों को इकट्ठा किया और साधु और बहू के लिए उल्टा-सीधा बोलने लगी। सुभद्रा को अपने लिए नहीं, परंतु साधु की बदनामी होने से धर्म पर आक्षेप आने का बहुत दुःख हुआ। उसने इस आक्षेप के विरोध में खाना छोड़ दिया और ध्यान में बैठ गई।

शासन देवी ने चंपानगरी के चार दिशाओं के चारों दरवाज़े बंद कर दिए।

यदि कोई सती स्त्री छलनी को कच्चे धागे से
बाँधकर कुँए में से पानी निकालकर,
चारों दरवाजों पर छिड़केगी,
तब ये दरवाज़े खुलेंगे।

सती सुभद्रा की पवित्रता शासन देवी-देवताओं से छुपी नहीं थी। शासन देवी ने चंपानगरी के चार दिशाओं के चारों दरवाज़े बंद कर दिए। न तो कोई नगर से बाहर जा सकता था, न ही अंदर आ सकता था और आकाशवाणी की, कि यदि कोई सती स्त्री छलनी को कच्चे धागे से बाँधकर कुँए में से पानी निकालकर, चारों दरवाजों पर छिड़केगी, तब ये दरवाज़े खुलेंगे।

छलनी में पानी? वह कैसे रुकेगा? लोग चर्चा करने लगे। अपने सतीत्व को परखने के लिए बहुत सी स्त्रियाँ दरवाज़े खोलने आईं, लेकिन किसी से दरवाज़े नहीं खुले। दिन बीतने लगे, अंत में सुभद्रा ने अपनी सास से पूछा, "माताजी , आज्ञा हो तो मैं दरवाज़े खोलने जाऊँ", सास ने व्यंग मारते हुए कहा, "तू कैसी सती है, वह सबको मालूम है।" सुभद्रा ने फिर से विनयपूर्वक पूछा, तो सास ने आज्ञा दे दी।

सुभद्रा ने छलनी को कच्चे धागे से बाँधकर कुएँ में डाला। चारों तरफ लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी और सबके आश्चर्य के बीच, पानी को भरी हुई छलनी कुएँ में से बाहर आई। सुभद्रा ने पानी के छिड़ककर दरवाज़े खोले। चारों तरफ सती सुभद्रा की जय-जयकार हुई। राजा और नगर के लोग शुभद्रा की प्रशंसा करने लगे, उसकी सास ने उससे माफ़ी माँगी।

कुछ समय के बाद सती सुभद्रा ने दीक्षा ली और कर्म पूरे करके मोक्ष में गई।

मीठी यादें

'लंदन के महात्मा नीरू माँ के पास आए थे। उन्हें पैसों के विचार बहुत आते थे कि कैसे अधिक से अधिक पैसे कमाए जाएँ। एक बार अपने घर के काम से दो-तीन महीनों के लिए लंदन गए थे। वहाँ जाने के बाद उन्हें कुछ महीने काम करके पैसे कमाने की इच्छा हुई। उन्होनें दूसरे ब्रह्मचारी भाई को अपनी इच्छा बताई। थोड़े दिनों बाद जब नीरू माँ वहाँ आईं, तब भाई ने नीरू माँ को अपनी इच्छा बताई तो नीरू माँ कुछ नहीं बोलीं।

एक दिन नीरू माँ उन भाई के साथ गाड़ी में बाहर जा रहीं थीं। तब उन्हों ने शांत चित्त से पूछा, "क्या तुझे पैसे कमाने हैं?" भाई ने जवाब दिया, "ऐसी इच्छा थी कि अभी दो-तीन महीने यहाँ हूँ, तो कुछ काम कर लूँ। समय भी निकले और थोड़ी कमाई भी हो जाए।" नीरू माँ ने कहा, "अब तुझे पैसा कमाने की क्या ज़रूरत है? तेरे पास तो काफ़ी पैसे हैं। अब यदि तू कमाने में लग जाएगा तो फिर वापस संसार में खो जाएगा।

दादा-दर्शन में कितने ही भाई ऐसे हैं कि उनके पास जो कुछ थोड़ा बहुत था वह लेकर, नीरू माँ के सहारे, नीरू माँ के भरोसे, वे सभी दौड़कर आ गए थे। उन्होंने कुछ विचार ही नहीं किया। तो फिर तुझे यह सब करने की क्या ज़रूरत है?" फिर नीरू माँ बहुत ही करुणा से बोलीं, "तू मेरे सहारे आया है, मुझे समर्पण किया है, तो मैं तेरी ज़िम्मेदारी लेती हूँ। अपने पास कुछ नहीं होगा, कोई चीज़ या पैसा नहीं होगा, तो भी मैं अपने हाथ से बनाकर तुझे खिलाऊँगी और फिर मैं खाऊँगी। और यदि ज़रूरत पड़ी तो ये मेरी चूड़ियाँ भी बेच दूँगी, लेकिन तुझे मैं भूखा नहीं रहने दूँगी।"

यह सुनकर उन भाई का तो सारा हृदय परिवर्तन ही हो गया। ओ हो हो! नीरू माँ मेरे लिए इतना सब करने को तैयार हैं कि अपने हाथ से बनाकर खिलाएँगी? और ज़रूरत पड़े तो अपनी चूड़ियाँ भी बेच देंगी, लेकिन मुझे भूखा नहीं रहने देंगी। उनकी आँखों से एकदम आँसू ही बहने लगे। उन्होंने तुरंत ही नीरू माँ को वचन दिया कि अब वह पैसे कमाने के पीछे कभी भी नहीं पड़ेंगे।

उस दिन से उन भाई को पैसे कमाने के विचार आने ही बंद हो गए।

ऐसी होती है, ज्ञानी की करुणा और कृपा!

प्रश्नकर्ता : मुझे मज़ाक उड़ाने की बहुत आदत है। और अब मेरे मित्र मेरे साथ बात ही नहीं करते, तो अब मैं क्या करूँ?

पूज्य श्री : मज़ाक ऐसा करना चाहिए कि किसी को दुःख न हो, किसी के अहंकार को ठेस न लगे। जब कि हम ऐसी बात कर देते हैं कि उनके अहंकार को चोट पहुँच जाती है। फिर वे अपने साथ बोलना बंद कर देते हैं। निर्दोष हँसी-मज़ाक होना चाहिए। निर्दोष मज़ाक होना चाहिए। इसलिए अब तुम प्रतिक्रमण करना। याद करके कि उस सहेली का मज़ाक उड़ाया था, उसके साथ ऐसा मज़ाक किया था। एक-एक मज़ाक को याद करके माफ़ी माँग लेना। मन में तय करना कि मुझसे किसीको दुःख हो ऐसा मज़ाक नहीं करना है। क्योंकि अपनी बुद्धि तेज हो और किसीका मज़ाक उड़ाएँ तो उससे ओरों को दुःख हो जाता है। इसिलए तुम तय करना कि मुझे किसीको दुःख नहीं देना, तो फ़र्क़ पड़ेगा और जिसे दुःख दिया हो उसका प्रतिक्रमण करना। फिर किसी दिन बर्थ डे या और किसी खास दिन सभी सहेलियों के साथ प्रेम से मिलकर सभी से माफ़ी माँग लेना और कहना कि, अब हम सब प्रेम से साथ में रहेंगे।

पूज्य श्री के साथ बच्चे

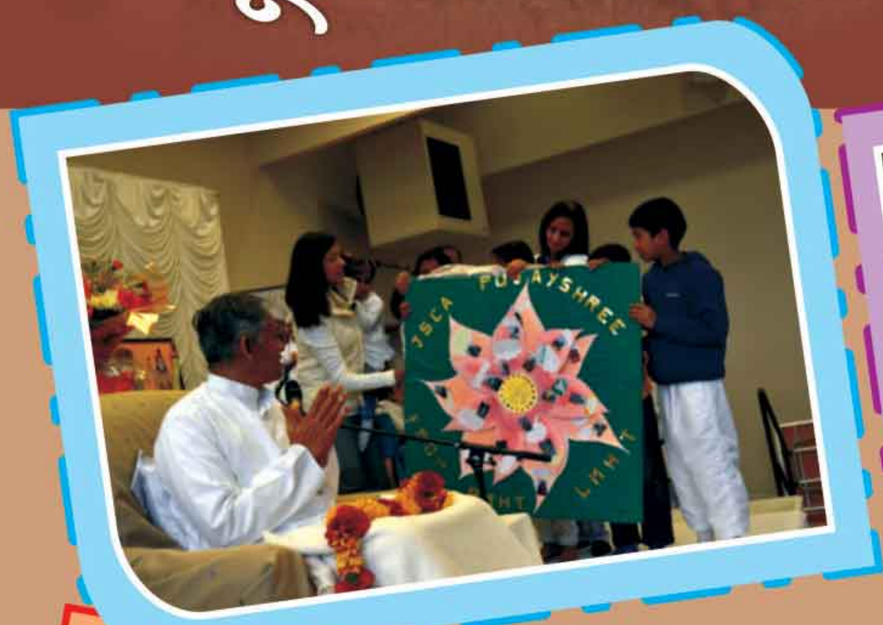

भारत के ही नहीं, विदेश के बच्चे भी पूज्य श्री के प्रति अद्भुत आकर्षण का अनुभव करते हैं तो आईए देखें यू.के और जर्मनी के बच्चों के साथ में पूज्य श्री.....

अक्रम एक्सप्रेस

June 2012
Year : 1, Issue : 2
Conti. Issue No.: 2

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

हिन्दी बाल साहित्य का पूज्यश्री द्वारा विमोचन!

मन्थली मेगेझिन
अक्रम एक्सप्रेस

'भगवान कहाँ रहते हैं ?'
बुक

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.